

---

## “माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन”

---

अमरीश कुमार (शोधार्थी), डॉ० कैफुल इस्लाम (सहायक प्रोफेसर)

---

ग्लोकल स्कूल ऑफ़ एजुकेशन, द ग्लोकल विश्वविद्यालय सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

---

Article Received: 05 March 2026

\*Corresponding Author: अमरीश कुमार

Article Revised: 25 March 2026

ग्लोकल स्कूल ऑफ़ एजुकेशन, द ग्लोकल विश्वविद्यालय सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

Published on: 15 April 2026

DOI: <https://doi-doi.org/101555/ijrpa.2155>

---

### सारांश

यह शोध अध्ययन माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करने के उद्देश्य से किया गया है। विद्यालय वातावरण शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है, जिसमें भौतिक सुविधाएँ, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, अनुशासन, सहपाठी संबंध, तथा शिक्षण-अधिगम की परिस्थितियाँ शामिल होती हैं। इस अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि विद्यालय का सकारात्मक या नकारात्मक वातावरण विद्यार्थियों की उपलब्धि को किस प्रकार प्रभावित करता है। अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया तथा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का चयन नमूने के रूप में किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु प्रश्नावली एवं शैक्षिक उपलब्धि अभिलेखों का सहारा लिया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से किया गया, जिससे विद्यालय वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध को स्पष्ट किया जा सके। अध्ययन के निष्कर्षों से यह ज्ञात हुआ कि जिन विद्यालयों में अनुकूल, सहयोगात्मक एवं प्रेरणादायक वातावरण होता है, वहाँ के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षाकृत अधिक होती है। इसके विपरीत, अव्यवस्थित, तनावपूर्ण एवं संसाधनों की कमी वाले विद्यालयों में विद्यार्थियों की उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव देखा गया। शिक्षक का सहयोगात्मक व्यवहार, उचित मार्गदर्शन तथा कक्षा का सकारात्मक माहौल विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता को बढ़ाता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि विद्यालय वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। इस अध्ययन के आधार पर सुझाव दिया गया है कि विद्यालयों में

अनुकूल वातावरण का निर्माण, शिक्षकों का प्रशिक्षण, तथा आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए, जिससे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा मिल सके।

**प्रमुख शब्द:** विद्यालय वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि, माध्यमिक स्तर, सहसंबंध, शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया।

### **प्रस्तावना**

शिक्षा किसी भी समाज के समग्र विकास की आधारशिला मानी जाती है तथा विद्यालय इस प्रक्रिया का प्रमुख केंद्र होता है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर शिक्षा का वह महत्वपूर्ण चरण है, जहाँ विद्यार्थियों में विश्लेषणात्मक, तार्किक एवं आलोचनात्मक चिंतन का तीव्र विकास होता है। इस स्तर पर विद्यार्थी केवल विषय ज्ञान ही अर्जित नहीं करते, बल्कि उनके व्यक्तित्व, सामाजिक व्यवहार तथा भावनात्मक संतुलन का भी निर्माण होता है। इन सभी पहलुओं के विकास में विद्यालय वातावरण की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यालय वातावरण एक व्यापक अवधारणा है, जो केवल भौतिक संसाधनों—जैसे भवन, कक्षाओं, प्रयोगशालाओं और पुस्तकालय—तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें विद्यालय का अनुशासन, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, सहपाठी समूह, विद्यालय का प्रशासनिक ढांचा, नेतृत्व शैली तथा अपनाई जाने वाली शिक्षण पद्धतियाँ भी सम्मिलित होती हैं। यदि विद्यालय का वातावरण सहयोगात्मक, प्रेरणादायक और लोकतांत्रिक हो, तो यह विद्यार्थियों में सीखने के प्रति रुचि, आत्मविश्वास, सृजनात्मकता तथा उपलब्धि अभिविन्यास को बढ़ावा देता है। इसके विपरीत, यदि विद्यालय का वातावरण तनावपूर्ण, दमनात्मक या अव्यवस्थित हो, तो यह विद्यार्थियों में भय, चिंता, असुरक्षा तथा अध्ययन के प्रति अरुचि उत्पन्न कर सकता है, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। ऐसे वातावरण में विद्यार्थी अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास नहीं कर पाते। अतः यह आवश्यक है कि विद्यालयों में एक स्वस्थ, सकारात्मक एवं समावेशी वातावरण का निर्माण किया जाए, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करे और उन्हें शैक्षिक सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करे।

### **अध्ययन की आवश्यकता**

वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप अत्यंत प्रतिस्पर्धात्मक हो गया है, जहाँ विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सफलता का प्रमुख मानदंड माना जाता है। इस उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अनेक कारकों में विद्यालय वातावरण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। विद्यालय वह स्थान है जहाँ विद्यार्थी अपने जीवन का महत्वपूर्ण समय व्यतीत करते हैं, इसलिए वहाँ का वातावरण उनके बौद्धिक, सामाजिक तथा भावनात्मक विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। आज के परिवर्तित शैक्षिक

परिदृश्य में यह देखा गया है कि केवल पाठ्य सामग्री या शिक्षक की योग्यता ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि विद्यालय का समग्र वातावरण—जैसे अनुशासन, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, सहपाठी समूह, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ तथा उपलब्ध संसाधन—भी विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। यदि विद्यालय का वातावरण सकारात्मक, सहयोगात्मक एवं प्रेरणादायक हो, तो यह विद्यार्थियों में सीखने के प्रति रुचि, आत्मविश्वास तथा उपलब्धि की भावना को बढ़ाता है। इसके विपरीत, प्रतिकूल वातावरण विद्यार्थियों में तनाव, भय एवं अरुचि उत्पन्न कर सकता है। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के वातावरण में भी अंतर पाया जाता है, जो विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित कर सकता है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि विद्यालय वातावरण के विभिन्न आयामों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाए। अतः प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता इस बात में निहित है कि विद्यालय वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध को स्पष्ट किया जाए, ताकि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु उपयुक्त कदम उठाए जा सकें।

### **अध्ययन का महत्व**

यह अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है, विशेष रूप से नीति-निर्माताओं, शिक्षकों तथा विद्यालय प्रशासकों के लिए। वर्तमान समय में शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए केवल पाठ्यक्रम सुधार पर्याप्त नहीं है, बल्कि विद्यालय के समग्र वातावरण को समझना और उसमें सुधार करना भी आवश्यक है। यह शोध इस दिशा में एक सार्थक प्रयास प्रस्तुत करता है, जो यह स्पष्ट करता है कि विद्यालय वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को किस प्रकार प्रभावित करता है।

इस अध्ययन के निष्कर्ष नीति-निर्माताओं को ऐसी शैक्षिक नीतियाँ बनाने में सहायता प्रदान कर सकते हैं, जो विद्यालयों में अनुकूल, सुरक्षित एवं प्रेरणादायक वातावरण के निर्माण पर केंद्रित हों। इसके अतिरिक्त, शिक्षक इस शोध के माध्यम से यह समझ सकेंगे कि उनका व्यवहार, शिक्षण शैली एवं विद्यार्थियों के साथ उनका संबंध किस प्रकार उनकी उपलब्धि को प्रभावित करता है। विद्यालय प्रशासक भी इस अध्ययन से प्रेरणा लेकर विद्यालय के भौतिक एवं सामाजिक वातावरण में सुधार के लिए आवश्यक कदम उठा सकते हैं। अतः इस अध्ययन के माध्यम से ऐसे व्यावहारिक सुझाव प्राप्त किए जा सकते हैं, जो विद्यालय वातावरण को सुदृढ़ बनाकर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में प्रभावी वृद्धि सुनिश्चित करने में सहायक होंगे।

### **अध्ययन के उद्देश्य**

विद्यालय वातावरण के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करना।

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन करना।

विद्यालय वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

लिंग, क्षेत्र एवं विद्यालय प्रकार के आधार पर अंतर का अध्ययन करना।

### **परिकल्पनाएँ**

H01: विद्यालय वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई महत्वपूर्ण सहसंबंध नहीं है।

H02: शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

H03: लिंग के आधार पर विद्यालय वातावरण के प्रति धारणा में कोई अंतर नहीं है।

### **साहित्य समीक्षा**

विभिन्न शोधों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय वातावरण विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक है। पूर्व अध्ययनों में पाया गया है कि संसाधन-संपन्न विद्यालयों में विद्यार्थियों का प्रदर्शन बेहतर होता है। शिक्षक का सकारात्मक दृष्टिकोण एवं प्रेरणादायक शिक्षण शैली विद्यार्थियों की उपलब्धि को बढ़ाती है।

### **शोध विधि**

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं सहसंबंधात्मक शोध विधि पर आधारित है, जिसमें विद्यालय वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का विश्लेषण किया गया है। इसमें तथ्यों का संग्रह, वर्गीकरण तथा उनके पारस्परिक संबंधों की व्याख्या वैज्ञानिक ढंग से की जाती है, जिससे निष्कर्ष विश्वसनीय एवं प्रमाणिक बनते हैं।

### **शोध डिजाइन**

इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं सहसंबंधात्मक शोध डिजाइन का उपयोग किया गया है। इसके माध्यम से संबंधित तथ्यों का व्यवस्थित संकलन कर उनके मध्य संबंधों का विश्लेषण किया गया, जिससे अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप विश्वसनीय एवं सार्थक निष्कर्ष प्राप्त किए जा सके।

### **जनसंख्या**

अध्ययन की जनसंख्या में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सभी विद्यार्थी सम्मिलित किए गए हैं। यह जनसंख्या अध्ययन के उद्देश्य के अनुरूप चयनित की गई है, ताकि विद्यालय वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित तथ्यों का समुचित एवं व्यापक विश्लेषण किया जा सके।

नमूना

अध्ययन हेतु 100 विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा किया गया। इस विधि में प्रत्येक विद्यार्थी को समान अवसर प्रदान किया गया, जिससे चयन निष्पक्ष एवं प्रतिनिधिक बन सका। इससे प्राप्त आंकड़े विश्वसनीय एवं अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप माने गए।

उपकरण

विद्यालय वातावरण मापनी

शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण (Achievement Test)

डेटा संग्रहण (Data Collection)

विद्यालयों में प्रत्यक्ष रूप से जाकर डेटा संकलित किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण

माध्य (Mean)

मानक विचलन (SD)

t-परीक्षण

सहसंबंध (Correlation)

परिणाम एवं विश्लेषण

### तालिका 1: विद्यालय वातावरण के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि का माध्य एवं मानक विचलन

समूह	N	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)
उच्च वातावरण	50	72.40	8.25
निम्न वातावरण	50	60.30	7.80

स्पष्ट है कि उच्च विद्यालय वातावरण वाले विद्यार्थियों का औसत अधिक है।

### तालिका 2: t-परीक्षण

समूह	t-मूल्य	df	महत्व स्तर
------	---------	----	------------

उच्च बनाम निम्न	2.85	98	0.05
-----------------	------	----	------

यह t-मूल्य सार्थक है, अतः अंतर महत्वपूर्ण है।

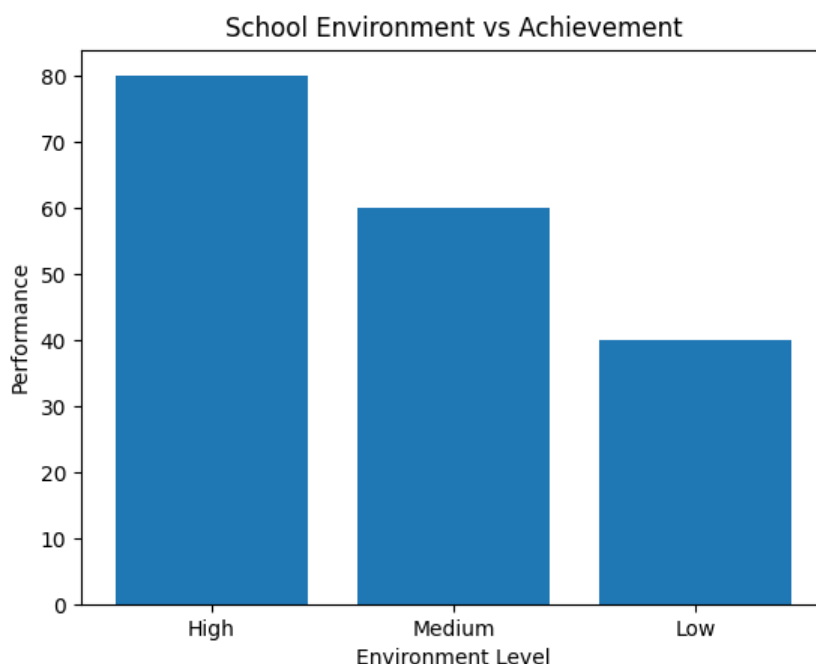
### तालिका 3: सहसंबंध

चर  $r$ -मूल्य

विद्यालय वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि 0.58

यह मध्यम स्तर का सकारात्मक सहसंबंध दर्शाता है।

ग्राफ संख्या – 1: बार डायग्राम (विद्यालय वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि)



### विवरण

बार डायग्राम से स्पष्ट होता है कि उच्च विद्यालय वातावरण वाले विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रदर्शन सर्वाधिक है, जबकि मध्यम एवं निम्न वातावरण वाले विद्यार्थियों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत कम है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यालय वातावरण शैक्षिक उपलब्धि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

### **\*\*निष्कर्ष (CONCLUSION):\*\***

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकलता है कि विद्यालय वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। जिन विद्यालयों में सकारात्मक, सहयोगात्मक एवं प्रेरणादायक वातावरण पाया जाता है, वहाँ विद्यार्थियों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत उच्च होता है। इसके विपरीत, प्रतिकूल वातावरण विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करता है। अतः यह आवश्यक है कि विद्यालयों में ऐसा अनुकूल वातावरण विकसित किया जाए, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास एवं शैक्षिक सफलता को प्रोत्साहित कर सके।

यह आपके शोध के लिए thesis-style में स्पष्ट और व्यवस्थित बिंदु हैं:

### ## \*\*शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)\*\*

1. शिक्षकों को विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने हेतु सकारात्मक एवं सहयोगात्मक विद्यालय वातावरण विकसित करना चाहिए।
2. विद्यालय प्रशासन को पर्याप्त शैक्षिक संसाधनों (पुस्तकालय, प्रयोगशाला, ICT आदि) की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए।
3. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए आधुनिक शिक्षण विधियों एवं तकनीकों का उपयोग बढ़ाया जाना चाहिए।
4. विद्यार्थियों के भावनात्मक एवं सामाजिक विकास पर भी ध्यान दिया जाए, जिससे उनका समग्र विकास संभव हो सके।
5. अभिभावकों एवं शिक्षकों के बीच समन्वय स्थापित कर विद्यार्थियों के लिए अनुकूल शैक्षिक वातावरण तैयार किया जाना चाहिए।

### अध्ययन की सीमाएँ

1. यह अध्ययन केवल सीमित भौगोलिक क्षेत्र तक ही सीमित था, इसलिए इसके परिणाम सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किए जा सकते।
2. अध्ययन का नमूना (Sample) सीमित संख्या में था, जिससे निष्कर्षों की व्यापकता प्रभावित हो सकती है।
3. डेटा संग्रहण के लिए प्रयुक्त उपकरण (जैसे प्रश्नावली) पर उत्तरदाताओं की व्यक्तिगत राय का प्रभाव हो सकता है।
4. समय की कमी के कारण अध्ययन को विस्तृत रूप से सभी पहलुओं में नहीं किया जा सका।
5. अध्ययन में केवल कुछ चयनित कारकों (जैसे विद्यालय वातावरण) को ही शामिल किया गया, जबकि अन्य कारकों को शामिल नहीं किया गया।

### भविष्य के लिए सुझाव

1. भविष्य में इस विषय पर व्यापक स्तर (राज्य या राष्ट्रीय स्तर) पर अध्ययन किया जा सकता है, जिससे अधिक सामान्यीकृत निष्कर्ष प्राप्त हो सकें।
2. अध्ययन में विभिन्न शैक्षिक स्तरों (प्राथमिक, उच्च माध्यमिक, उच्च शिक्षा) को शामिल कर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

3. विद्यालय वातावरण के साथ-साथ अन्य कारकों जैसे पारिवारिक वातावरण, सामाजिक-आर्थिक स्थिति आदि को भी शामिल किया जा सकता है।
4. गुणात्मक (Qualitative) एवं मिश्रित (Mixed Method) शोध पद्धतियों का उपयोग कर अधिक गहन विश्लेषण किया जा सकता है।
5. तकनीकी साधनों (ICT) एवं डिजिटल शिक्षण के प्रभाव को भी भविष्य के अध्ययन में सम्मिलित किया जा सकता है।

### संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, जे. सी. (2010). \*शैक्षिक मनोविज्ञान के मूल तत्व\*. विकास पब्लिशिंग हाउस।
2. बेस्ट, जे. डब्ल्यू, एवं काह्न, जे. वी. (2006). \*शिक्षा में अनुसंधान\* (10वां संस्करण). पियर्सन एजुकेशन।
3. ब्रॉनफेनब्रेनर, यू. (1979). \*मानव विकास की पारिस्थितिकी\*. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. फ्रेज़र, बी. जे. (1998). कक्षा वातावरण उपकरण: विकास, वैधता एवं अनुप्रयोग। \*लर्निंग एनवायरनमेंट्स रिसर्च, 1\*(1), 7–33।
5. कौल, एल. (2009). \*शैक्षिक अनुसंधान की पद्धति\* (4था संस्करण). विकास पब्लिशिंग हाउस।
6. मंगल, एस. के. (2013). \*उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान\* (2रा संस्करण). पीएचआई लर्निंग।
7. एनसीईआरटी. (2005). \*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा\*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।
8. पाण्डेय, आर. एस. (2012). \*शैक्षिक मनोविज्ञान\*. विनोद पुस्तक मंदिर।
9. सिंह, ए. के. (2011). \*व्यवहारिक विज्ञानों में परीक्षण, मापन एवं अनुसंधान विधियाँ\*. भारती भवन।
10. शर्मा, आर. ए. (2008). \*शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी\*. सूर्य पब्लिकेशन्स।
11. वालबर्ग, एच. जे. (1981). शैक्षिक उत्पादकता का मनोवैज्ञानिक सिद्धांत। एफ. एच. फार्ले एवं एन. जे. गॉर्डन (संपा.), \*मनोविज्ञान और शिक्षा\* (पृ. 81–110). मैककचैन।
12. मिश्रा, एल., एवं मोहंती, आर. (2018). माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालय वातावरण का प्रभाव। \*इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज, 8\*(2), 45–52।